॥राम॥
॥राम॥
श्रीरामरस भजन स्तुति
सङ्ग्रहकर्ता व सम्पादक
पं.त्रिलोचन्द जाजड़ा
पं.श्रीराधे जोशी
परम् पूज्य स्व. पण्डित श्रीत्रिलोचन्द जी
जाजड़ा दुलचासर के स्मृति में श्रीराम
रसिकों समर्पित :- शुल्क - सदुपयोग
google Download archive :- trilok chand jajara

।। श्री गणेशाय नमः ।।

आरती संग्रह

स्व पंडित त्रिलोकचन्द जाजड़ा

ग्राम दुलचासर (सूडसर)

जिला बीकानेर 331811

फोन नं. 9530105983

मुद्रक :- गुरूकृपा ऑफसेट प्रिन्टर्स जैसलमेर 9413866522, 02992-256101

ॐ
न
मः
शि
वा
यः

आरती सतगुरू देवजी की

आरती सतगुरूदेवजी की कीजे
सुर-नर मुनिजन सब कोई रीजै ......।।टेर।।

1. सत् गुरू स्वामी अनन्त फल दाता।
   जिसका अंत कबहु नही आता।
   शीष नारेल चरण धर दीजै।।
2. जप-तप नेम किया बहु तेरा।
   गुरू बिना मिट्या न चौरासी रा फेरा।
   और ठौड़ मेरो मन न पतीजै।
3. सत् गुरू ब्रह्मा विष्णु जाणो।
   सतगुरू शंकर आप पिछाणों।
   सतगुरू पूर्ण ब्रह्म कहीजै।।
4. सत् गुरू रूठे तो सब कोई रूठे।
   ब्रह्मा, विष्णु भी होत अपूटे।
   सतगुरू मने तो सब ही मनीजै।।
5. चाह को चन्दन करणी की केशर।
   ज्ञान वैराग गुलाल चढाओं।
   श्रृद्धा रूपी थाल सो परम सजीजै।।
6. विरह की अग्नि गम को गूगल।
   धूप-दीप नित ध्यान धराओ।
   प्रेम कर्पूर सोई धर दीजै।।
7. विवेक नाथ मन में ऐसी मस्ती आई।
   श्री उत्तमनाथ गुरू दाता सैंण बताई।
   सुणलो थे सब बहनों-भाई।
   सतगुरू चरण कमल चित दीजै।।
8. ऐसी आरती सुबह-शाम कीजै।
   जनम-मरण, भव सागर तरिये।।

श्री आशापूर्णाजी की आरती

जय दुर्गे-दुर्गति परिहारीणी।
शुभ-विदारिणी मात भवानी ......।।टेर।।

1. आदि शक्ति परब्रह्म स्वरूपिणी।
   जग-जननी चहुं वेद बखानी।।
2. ब्रह्मा शिव हरि पूजन (अर्चन) कीन्हों।
   ध्यान धरे सुर नर मुनि जन ज्ञानी।।
3. अष्ट भुजा कर खड़ग विराजे।
   सिंह सवार सकल वरदायनी।।
4. ब्रह्मानन्द शरण में आयो।
   भव-भय नाश करो महाराणी।।

आरती श्री भैरव भगवान की

जय भैरव भगवान ब्रह्मचारी ।।टेर।।

1. शिव शंकर के आप अवतारी ।
   मां हिंगलाज के आप आज्ञाकारी।।
2. मठ मंदिरो के आप चौकीदारी।
   आसरी मठ के लोंठों लठ धारी।।
3. काशी-वासी अविनाशी भैरव महिमा भारी।
   घुंघरू बजावता आओ, श्वान की सवारी।।
4. शिवसुखनाथ मैं जाऊँ बलिहारी।
   भव सागर से म्हारी नैया तारी।।

आरती सत्गुरू नाथ निरंजन की।।

सखिऐ आरती उतारो सत्गुरू देव निरंजन की।
देव निरंजन की अपने सब दुःख भंजन की ।।टेर।।

1. सखिऐ शेंश किरणों में सूरज उगियो।
   यहाँ पर है गुरू शब्दों रो प्रकाश।।
2. सखिऐ पांच तत्वों रो दिवलो सजो संजोवसो।
   बाटड़ली बणाओं मन स्यो।।
3. इड़ा और पिंगला रो सुखमण।
   उरध सिंघासन पर जाय।।
4. सत्गुरू मैं तो अज्ञानी शरणे आविया।
   राखो म्हाने चरणों री ओट।।
5. सत्गुरू स्वामीजी डूंगरपुरीजी बोलिया।
   गुण सत्गुरू गोरख नाथ जी रा गाय।

गणेश वन्दना

मेरे लाडले गणेश प्यारे-प्यारे,
भोले बाबाजी के आँखों के तारे,
प्रभु सभा बीच में आ जाना-आ जाना।

तेरी काया कंचन-कंचन, किरणों का है जिसमें बसेरा,
तेरी सूंड सुंडाली मूरत, तेरी आँखों में खुशियों का डेरा,
तेरी महिमा अपरम्पपार, तुझको पूजे ये संसार,
प्रभु अमृत रस बरसा जा ना-आ जाना। मेरे लाडले ....

प्रभु भजन तुम्हारे गाएं, सबसे पहले प्रभु को मनाएं,
धूप दीपों की ज्योति जलाएं, मन मंदिर में झांकी सजाएँ,
मेरे भोले भगवान, दे दो भक्ति का दान,
प्रभु नैय्या पार लगा जा ना-आ जाना। मेरे लाडले ....

मेरे विघ्न विनाशक देवा, सबसे पहले करे तेरी सेवा,
सारे जग में आनन्द छाया, बोलो जै-जै गजानन्द देवा,
बाजे सुर और ताल, तेरा गुण गाए गोपाल,
घुंघरू की खनक-खनक जा ना-आ जाना। मेरे लाडले ....

म्हारा प्यारा गजानन्द आइज्यों

म्हारा प्यारा रे, गजानन्द आइज्यों
थे रिद्ध-सिद्ध संग में लाज्यो जी ।।टेर।।

थान सबसे पहले मनावां, थारे लड्डुवन भोग लगावा,
थे मूसे चढ़कर आज्योजी।। म्हारा प्यारा.....................१

मां पार्वती का प्यारा, शिवशंकर लाल दुलारा।
थे बान्ध पगड़ी आज्योजी।। म्हारा प्यारा २

थे रिद्ध-सिद्ध का दातारी, थाने ध्यावे दुनियासारी।
म्हारा अट क्या काज संवारोजी।। म्हारा प्यारा ३

थारो शिवमंडल यश गावे, चरण में शीश नवावे।
म्हारा नैया पार लगाज्यो।। म्हारा प्यारा य............... ४

श्री भागवत भगवान की आरती

श्री भागवत भगवान की है आरती
पापियों को पाप से है तारती।।
श्री भागवत भगवान की..............

ये अमरग्रन्थ ये मुक्ति पंथ ये पंचम वेद निराला है
नव ज्योति जगाने वाला है –
हरिनाम यही हरिध्यान यही जग के मंगल की आरती
पापियों को पाप से है तारती।।
श्री भागवत भगवान की............. ।।1।।

ये शान्ति गीत पावन पुनीत पापों को मिटाने वाला है
हरि दरश कराने वाला है।।
ये सुख करणी ये दुःख हरणी श्रीमधुसूदन की आरती।
पापियों को पाप से है तारती।।
श्री भागवत भगवान की.......... ।।2।।

ये मधुर बोल जग पंथ खोल सन्मार्ग बताने वाला है,
बिगड़ी को बनाने वाला है।
श्री राम यही घनश्याम यही प्रभू की महिमा की आरती
पापियों को पाप से है तारती।।
श्री भागवत भगवान की.......... ।।3।।

राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे 7 राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे

आरती अति पावन पुराण की

आरति अति पावन पुराण की।
धर्म भक्ति विज्ञान खान की।
महापुराण भागवत निर्मल।
शुक–मुख विगलित निगम कल्पफल।।
परमानन्द सुधा रसमय कल।
लीला रति–रस रसनिधान की।। आरती ... ।।1 ।।

कलि–मल–मथनि त्रिताप–निवारिणी।
जन्म–मृत्युमय भव–भय–हारिणी।।
सेवत सतत् सकल सुखकारिणि।
सुमहौषधि हरि–चरित–गान की ।। आरती ... ।।2 ।।

विषय–विलास–विमोह–विनाशिनि।
विमल–विराग विवेक विकासिनी।
भगवत्तत्व–रहस्य प्रकाशिनि।
परम ज्योति परमात्मा–ज्ञान की।। आरती ... ।।3 ।।

परमहंस–मुनि–मन उल्लासिनि।
रसिक–हृदय रस रास विलासिनि।
भुक्ति, भुक्ति, रति प्रेम सुदासिनि।
कथा अकिंचन प्रिय सुजान की।।
आरति अति पावन पुराण की।
धर्म–भक्ति विज्ञान खान की।। आरती ... ।।4 ।।

श्री साँवला सेठ की आरती

साँवल सा गिरधारी भला हो रामा साँवल सा गिरधारी SSSS।
हो हरि बिना मोरी, गोपाल बिना मोरी, साँवल सेठ बिना मोरी।।
कोन खबर ले,
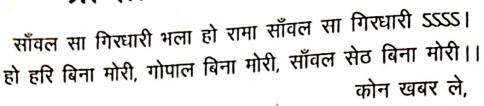
मोर मुकुट सिर छत्र विराजे, मोर मुकुट हरि रे छत्र विराजे।
कुण्डल की छवि न्यारी, भला हो रामा, कुण्डल की छवि न्यारी।। हो...1।।
लटपट पाग केसरिया जामा, लटपट पाग कुसुंमल जामा।
हिवड़े रो हार हजारी, भला हो रामा, गल बीच हार हजारी।। हो....2।।
वृन्दावन में धेनु चरावे, माधोवन में गैया चरावे।
बंशी बजावे गिरवर धारी, भला हो रामा, मुरली बजावे छत्रधारी।। हो....3।।
वृन्दावन में रास रच्यो है, माधोवन में लीला हो करी है।
सहस्त्र गोप्यां ये गिरवरधारी, भला हो रामा, सहस्त्र गोप्यों रो बनवारी।। हो...4।।
वृन्दावन की कुन्ज गलिन में, माधोवन की कुन्ज गलिन में।
खेलत राधा प्यारी, भला हो रामा, खेलत कृष्ण मुरारी।। हो.....5।।
इन्द्र कोप कियो ब्रज ऊपर, इन्द्र कोप कियो ब्रज ऊपर।
नख पर गिरवरधारी, भला हो रामा, नख पर गिरवरधारी।। हो.....6।।
छप्पन भोग छत्तिसो व्यंजन–छप्पन भोग छत्तिसो व्यंजन
भोग लगावे राधे प्यारी, भला हो रामा भोग लगावे राधे प्यारी।।हो.....7।।
औरन को प्रभु और भरोसो, औरन को प्रभु और भरोसो।
हमको तो आस तिहारी, भला हो रामा, हमको तो आस तिहारी।। हो....8।।
बाई मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बाई मीरा के प्रभु नटवर नागर।
चरण कमल बलिहारी, भला हो रामा, हरि के चरण बलिहारी।। हो....9।।
साँवला सा गिरधारी, हो भरोसा भारी, हो शरण तिहारी,
हो लज्जा म्हारी, हो कुन्ज बिहारी, हो गिरवर धारी, हो मुरली धारी,
हो हर विना मोरी गोपाल बिना मोरी,
सांवले सेठ विना मोरी–कोन खरर ले।।

राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे ९ राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे

श्री श्याम जी की आरती

श्याम तेरी आरती, कन्हैया तेरी आरती।
सारा संसार करेगा कर जोड़ के।।
सिर पर सोहनां मुकुट विराजे, गल बैजयन्ती माला साजे।
और फूलन के हार, करेंगे कर जोड़ के।। श्याम तेरी.....।।
ब्रह्मादिक तेरो यश गावे, नारद शारद ध्यान लगावे।
और करें जै जै कार, करेंगे कर जोड़ के।। श्यामा तेरी....।।
मैं हूँ दीनन दुखिया भारी, आया हूँ प्रभु शरण तिहारी।
रखियो लाज हमार, करेंगे कर जोड़ के ।। श्यामा तेरी....।।
अपनें चरणों की भक्ति दीजे, अपनी शरण में मोहे रख लीजे।
करो भव सागर पार, करेंगे कर जोड़ के।। श्यामा तेरी....।।
प्रेम सहित जो आरती गावे, श्री राधा माधव पद पावे।
बाढ़ै शूयश अपार, करेंगे कर जोड़ के।। श्यामा तेरी.....।।
श्यामा तेरी आरती, कन्हैया तेरी आरती।
सारा संसार करेगा कर जोड़ के।।

श्री शंकर जी की आरती

शीश गंग अर्द्धंग पार्वती, सदा विराजत कैलाशी।।
नन्दी भृंगी नृत्य करत हैं, गुण भक्तन शिव के गासी।।
शीतल मंद सुगन्ध पवन बहे, जहाँ बैठे शिव अविनाशी।।
करत गान गंधर्व सप्त सुर, राग रागिनी अति गासी।।
यक्ष–रक्ष भैरव जहाँ डोलत, बोलत हैं वन के वासी।।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भँवर करत हैं गुंजासी।।
कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु, लाग रहे हैं लक्षासी।।
कामधेनु कोटिक जहाँ डोलत, करत फिरत है भिक्षासी।।
सूर्यकान्त सम पर्वत सोभित, चन्द्रकान्त भवके वासी।।
छहों तो ऋतु नित फलत रहत हैं, पुष्प करत हैं वर्षासी।।
देव मुनि जन की भीड़ पड़त हैं, निगम रहत जो नित गासी।।
ब्रह्मा विष्णु जाको ध्यान निरन्तर, मना लगाय कर जो गासी।।
ऋद्धि–सिद्धि के दाता शंकर, सदा आनन्दित सुखराशि।।
जिनको सुमिरन सेवा करता छूट जाय यम की फाँसी।।
त्रिशूल धरजी को ध्यान निरन्तर, मना लगाय कर जो गासी।।
दूर करो विपदा शिव उनकी, जन्म जन्म शिव पद पासी।।
कैलाशी काशी के वासी बाबा, अविनाशी मेरी सुध लीजो।।
सेवक जान सदा चरणन को, अपनो जान दरश दीजो।।
आप तो प्रभुजी सदा सयाने बाबा, अवगुण मेरे सब ढकियो।।
सब अपराध क्षमा कर शंकर, किंकर की विनती सुनियो।।
अभय दान दीजे प्रभु मोको, सकल सृष्टि के हितकारी।।
भोलेनाथ बाबा भक्त निरंजन, भव भंजन भव शुभकारी।।
काल हरो हर कष्ट हरो हर, दुःख हरो दारिद्र हरो।।
नामामि शंकर भवानी भोले बाबा, हर–हर शंकर आप शरणम्।।
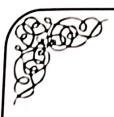
॥ स्तुति ॥

श्री 'मंगल' की सेवा, सुन मेरी है देवा, हाथ जोड़ थारे द्वार खड़े।
श्री पान सुपारी ध्वजा, नारियल, ले ज्वाला थारे भेंट करे।
सुन जगदम्बे, न कर विलम्बे, सन्तन का भण्डार भरे, हो मैया
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली, मैया जय काली कल्याण करे।।
'बुद्धि' विधाता तु जग है माता, मेरा कारज सिद्ध करे हो मैया
श्री चरण कमल को लियो आसरो, शरण तुम्हारी आन पड़े।
है माँ जब-जब भीड़ पड़ी भक्तन पर, तब-तब आय सहाय करे
संतन प्रतिपाली ॥ १ ॥.............

'वीरवार' के सब जग हे मोह्यो, तरूणी रूप अनुप धरे हो मैया
श्री माता होकर पुत्र खिलावे, कहीं भार्या भोग भरे,
माँ थारी महिमा कब लख है वरणू बैठी कोट कल्याण करे हो
संतन प्रतिपाली ॥ २ ॥.............

'शुक्र' सुखदायी सदा सहाई, संत खड़े जय जय कार करे हो मैया
श्री ब्रह्मा विष्णु महेश सहस्त्र फल, लिये भेंट थारे द्वार खड़े है
माँ अटल सिंहासन बैठी मेरी हे माता, सिर सोने का छत्र धरे
संतन प्रतिपाली ॥ ३ ॥.............

वार 'शनिश्चर' कुंकुम् वरणो, जब लड़कन पर हुक्म करे हो मैया
श्री खड़ग त्रिशुल हाथ लिये, रक्त बीज को भष्म करे
है माँ शुम्भ निशुम्भ पछाडियो मेरी है माता, महिपासुर को पकड़ दले
संतन प्रतिपाली ॥ ४ ॥.............

'अदितवारी' आद भवानी, जन अपने का कष्ठ हरे
श्री कोप होय कर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूर करे
है माँ जब तुम देखो दया रूप होय, पल में संकट दूर करे हो मैया
संतन प्रतिपाली ॥ ५ ॥.............

श्री 'सोम' स्वभाव धर्‌यो मेरी है माता, जनकी अरज कबुल करे
श्री सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी, अटल भवन में राज करे
हे माँ दुनियाँ आवे दर्शन है पावे, साधु संत थारे भेंट धरे
संतन प्रतिपाली ॥ ६ ॥.............

सात बार की महिमा वरणी, थारी महिमा अति भारी हो मैया
श्री चांद सूरज दोय तपे तेज में, थारे तेज री बलिहारी
है माँ ब्रह्मा वेद पढे थारे हे द्वारे, शिवशंकर थारों ध्यान धरे हो मैया
श्री इन्द्र कृष्ण थांरी करे आरती, चँवर कुबेर डुलाय रहे है माँ
जय जननी जय माता भवानी, अटल पवन में राज करे
संतन प्रतिपाली ॥ ७ ॥.............

हे मैया जय काली कल्याण करे, हे मैया नव दुर्गा मेरी सहाय करे
हे मैया हाथ जोड़ थांरं द्वार खड़े, हे मैया आनन्द ही आनन्द करे
हे मैया भक्त खड़े जय-जय कार करे, हे मैया भक्तन का भण्डार भरे
संतन प्रतिपाली ॥ ८ ॥.............
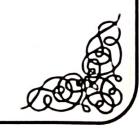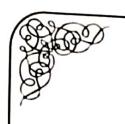
॥ गायत्री माता आरती ॥

।। जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।।

आदि शक्ति तुम अलख निरंजन, जग पालन कर्त्री ।
दुःख शोक भव क्लेश कलह, दारिद्रय दैन्य हरती ।।१।।
ब्रह्म रूपिणी, प्रणत पालिनी, जगतधातृ अम्बे ।
भवभयहारी, जन हितकारी, सुखदा जगदम्बे ।।२।।
भय हारिणी भव तारिणी अनघे, अज, आनन्द राशी ।
अविकारी, अघहरी अविचलित अमले, अविनाशी ।।३।।
कामधेनु सत् चित् आनन्दा, जय गंगा गीता ।
सविता की शाश्वती शक्ति, तुम सावित्री सीता ।।४।।
ऋग्, यजु, साम, अथर्व प्रणयिनी, प्रणव महामहिमे ।
कुण्डलिनी, सहस्त्रार, सुषुम्ना शोभा गुण गरिमे ।।५।।
स्वाहा, स्वधा शची ब्रह्माणी, राधा रूद्राणि ।
जय शतरूपा वाणी विद्या, कमला कल्याणी ।।६।।
जननी हम हैं दीन दुःख दारिद्र के घेरे ।
यद्यपि कुटिल कपटी कपूत तरू बालक है तेरे ।।७।।
स्नेह सनी करूणामयी माता चरण-शरण दीजे ।
बिलख रहे हम शिशु सूत तेरे, दया दृष्टि कीजै ।।८।।
काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, दुर्भाव, द्वेष हरिये ।
शुद्ध-बुद्धि-निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करिये ।।६।।
तुम समर्थ सब भांति तारिणी, तृष्टि, पुष्टि त्राता ।
सत् मारग पर हमें चलाओ जो है सुख दाता ।।१०।।

।। जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता ।।
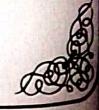
माता लक्ष्मी जी की आरती

ओउम् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत् हर विष्णु धाता। ओउम्...

उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्यचंद्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।। ओउम्...

दुर्गा रूप निरंजनी, सुख-संपत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि सिद्धि पाता।। ओउम्...

तुम पाताल निवासनी, तुम ही शुभ दाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भव निधि की त्राता।।
ओउम्...

जिस घर में तुम रहती, सब सद्गुण आता।
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता।। ओउम्...

तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता।। ओउम्...

शुभगुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि-जाता।
चतुर्दशी तुम बिन, कोई नहीं पाता।। ओउम्...

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता।
उर आनंद समाता पाप उतर जाता।। ओउम्...

लगेय-यह आरती के बाद जल से छांय

छांट लाग्या नीर का पाप गया शरीर का

छांट लाग्या चन्दंन का नाम लेवो रघुनन्द का

छांट लाग्या केसर का नाम लेवो परमेश्वर का

छांट लाग्या पाणी का नाम लेवो राधे राणी का

छांट लाग्या जल का नाम लेवो हरिहर का

सर्व विहन विनाशाय सर्व कल्याण हेत वे।

पार्वती प्रियपुत्राय गणेशाय नोमी नम:।।

क्रम प्रथम – गणेश मन्ज

द्वितीय – सरस्वती प्रार्थना

तृतीय – शिव प्रार्थना

चतुर्थ – देवी प्रार्थना

पञ्चम – कृष्णा प्रार्थना

।। श्री काशी विश्वनाथों विराजते ।।

सभी मिल शक्तया नवलख संग डोकरी जीमों डाढाली।

सुवर्ण शाल शाल छत्तीसों भोजन। बैठों बिरढाली।

आप अरोगो भात ईश्वरी माँ शेरावाली।।

साठ पुलाव शोयता लिज्यों मातामतवाली।

दाख जलेबी और चूरमों जिमों माँ काली।

घेवर पुड़ी पक्कवान मिठाई खटरस इक शाली।

आप अरोगों भात ईश्वरी चण्डी चिरताली।

ढोल नगारा नोवत झालर बाज रही ताली

मेहाई जद् मात ईश्वरी बीस भुजावाली। (अरोगो)

ऋिद्धि-सिद्धि चँवर करे निज करस्य

आनंद उजियाली

कान्चन कलश गंगाजल भरियों पीवों प्रतिपाली

अम्बादान चण्डी तेरो चेरो माँ धावल वाली

काटो कष्ट हरो दरिद्रता करो सम्पति शाली।

सभी मिल शक्त्यां डाढाली।।

।। श्री भगवती स्त्रोतम ।।

जय भगवती देवी नमो: वरदे, जय पापविनाशिनि बहुफलदे।
जय शुम्भनिशुंभकपालधरे, प्रणमामि तु देवि नरार्तिहरे।।१।।
जय चन्द्रदिवाकरनेत्रधरे, जय पावकभुक्तिवक्त्रवरे।
जय भैरवदेहनिलीनपरे, जय अन्धकदैत्यविशोषकरे।।२।।
जय महिषविमर्दिनि शूलकरे, जय लोकसमस्तकपापहरे।
जय देवि पितामहविष्णुनते, जय भास्करशक्रशिरोऽवनते।।३।।
जय षण्मुखसायुधईशनुते, जय सागरगामिनि शम्भुनुते।
जय दु:खदरिद्र विनाश करे, जय पुत्रकलत्रविवृद्धिकरे।।४।।
जय देवि समस्त शरीरधरे, जय नाक विदर्शिनि दु:ख हरे।
जय व्याधि विनाशिनि मोक्षकरे, जय वांछित दायिनि सिद्धिवरे।।५।
एतद् व्यासकृतं स्तोत्रं य: पठेन्नियत: शुचि:।
गृहे या शुद्ध भावेन प्रीता भगवती सदा।।६।।
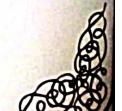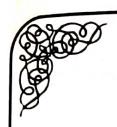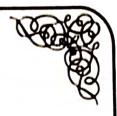
।। श्री ।।

शैल सुतानों मे वेद पुराणों में ध्यान धर्‍या दुःखो को हरती हो

जब भक्तन् पर भीड पड़े माँ अष्ट भुजा बल से हरती हो,

लाल ध्वजा शिर छत्र विराजत सिंह चढ़े वन में फिरती हो,

मेरी बैर यूं देर भई जगदम्ब विलम्ब कहाँ करती हो।

दे दे सद् बुद्धि दे भवति धन दे विद्या बल स्थूल दे

षट किर्ति वर दे कलत्र सुख दे दान सुपात्रश्च दे

इच्छा भोजन दे, गुरु स्मरण दे, षट कर्मदा नित्य दे,

वेदा रस रुचि दे हरि भजन दे मैया तेरो दर्श दे।

बारम्बार कही सुनी ना चित दे सुता कहाँ महल में।

क्या थे काम लग्या भवन में क्या थे लग्या ध्यान में

क्या थारी मर्जी हमें है गरजी माता जरा ध्यान दों।

सुनलो चित्त लगाय अब तो कीजे भलों भक्त को।।

हनुमान हठील रंगील दलीं जिन मान मथ्यों लग गढ लंक पति को।

पैठि पाताल हर्‍यो अहि रावण जिन देखत तेज घट्यो शक्ति को।

अंजनि को पुत्र रामजी को पायक शोक हर्‍यो एक सिया सती को।

तुलसी संकट क्यो न कटे जब ध्यान धरे हनुमान जती को।
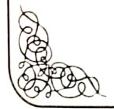
।। दधिमथी स्तुति ।।

।। कुलदेवी स्तुति ।।

(तर्ज करमा बाई को खिचड़लो)

मैया दीज्यो ए प्रसादी हाथ बढाय बाहर उभा टाबरिया । टेर।।

म्है हां थारां टाबर मैया तूं है म्हारी माय।

कुल देवी जगदम्बा अम्बा, लुळ लुळ लागूं पाय।।

अम्बा दीज्यो ए चरणामृत अमृत धार।।१।।

चरणामृत चरणा को दीज्यो, केशर चन्दन साथ।

दूध पतासा मिश्री दीज्यो, मीठा रहसी हाथ।

अम्बा दीज्यो ए मेवारां, भर-भर थाल।।२।।

अन्न - धन रा भंडार भरीज्यो, लक्ष्मी दीज्यों अपार।

सभी रकम वस्तु मैया, घर में दीज्यो बसाय।

अम्बा दीज्यों ए सोनेरो नौसर हार।।३।।

थारं चरणां री भक्ति दीज्यो, चोखो दीज्यो ज्ञान।

भरी सभी पंचा मे मैया, महरो राखज्यो मान।।

मैया दीज्यो ए नैणारी ज्योति अपार।।४।।

टाबरियां ने गोद झडुलो, देय बुलाज्यों आप।

अत्रिदास शरण मां थांरी भूल करीज्यो माफ।

अम्बा दीज्यो ए सेवा भक्ति रो सार।।५।।

।। श्री काशी विश्वनाथों विजराते ।।

हे गिरधर तेरी आरती गाऊँ

श्री श्याम सुन्दर (जी) तेरी ....

हे बाँके बिहारी तेरी ....

आरती गाऊँ प्यारे तुमको मनाऊ । हे

मोर मुकुट प्रभु शीश पे सोहे २

प्यारी मुरली मेरो मन मोहे २

देख छबी बलिहारी में जाऊँ।। हे

चरणो से निकली गंगा प्यारी २

जिसने सारी दुनिया तारी २

इन चरणों में शीश नवाऊँ ।। हे

दास अनाथ के नाथ आप हो २

सुख दु:ख जीवन प्यारे साथ आप हों।

इन चरणों में बलि-बलि जाऊँ ।। हे ......

भक्त जनों प्यार तुम हो

मेरे मोहन जीवन धन हो।

किस विध तेरा दर्शन पाऊँ

श्री बाँके बिहारी............ हे बाँके बिहारी ....

।। सालिगराम - पूजन ।

सालिगराम सुनो विनती मोरी, यह वरदान दया कर पाऊँ।।

राधे कृष्ण सुनो मेरी विनती टेर।।

आप विराजो रतन सिंहासन, झालर शंख मदृंग बजाऊँ।

धूप दीप तुलसी की माला, वरण वरण का पुष्प चढाऊँ।।१।

जो कुछ अहार मिले प्रभु मोकुँ, भोग लगाकर भोजन पाऊँ।

छप्पन भोग छतीसौं मेवा, प्रेम सहित मैं तुम्हें जिमाऊँ।।२।

एक बूँद चरणामृत लेकर, कुटम्ब सहित बैकुण्ठ पठाऊँ।

जो कुछ पाप किया काया से, दे परिकम्पा शीश नवाऊँ।।३।

डर लागत मोहि भव सागर को, यमके द्वारे प्रभु में नहिं जाऊँ।

राम प्रताप कहे कर जोड़े जन्म-जन्म को दास कहाऊँ।।४।
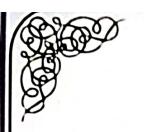
।। श्री दधिमथि अष्टापदी ।।

जय जय जनक सुनन्दिनी हरिवन्दिनी हे।
दुष्टनिकन्दिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये ।। टेर ।।
सकल मनोरथ दायिनी जग सोहिनी हे।
पशुपति मोहिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये ।।१।।
विकट निशाचर कुन्थिनी, दधिमन्थिनी हे।
त्रिभुवन ग्रन्थिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये ।।२।।
दिवानाथ समभाषिनी मुखहासिनी हे।
मरुधर वासिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये ।।३।।
जगदम्बे जय कारिनी, खल हारिणी हे।
मृगरिपुचारिणी मात, जय जय विष्णु प्रिये ।।४।।
पिप्पलादमुनिपालिनी, वपुशालिनी हे।
खल दलदालिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये ।।५।।
तेज विजित सौदामिनी, हरिभामिनी हे।
अयि गजगामिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये ।।६।।
धरनी धर सुसहायिनी, श्रुति-गायिनी हे।
वांछित दायिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये ।।७।।

।। मंगलगीतम् ।।

श्रितकमलाकुचमण्डल धृतकुण्डल ए । कलितललितवनमाल जय जय देव हरे।

दिनमणिमण्डलमण्डल भवखण्डन एं । मुनिजनमांनसहंस जय जय देव हरे।

कालियविषधरगन्जन जनरन्जन ए । यदुकुलनलिनदिनेश जय जय देव हरे।

मधुमुरनरकविनाशन गरुडासन ए । सुरकुलकेलिनिदान जय जय देव हरे।

अमलकमलदललोचन भवमोचन ए । त्रिभुवनभवननिधान जय जय देव हरे।

जनकसुताकृतभूषण जितदूषण ए । समरशतिमदशकण्ठ जय जय देव हरे।

अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए । श्री मुखचन्द्रचकोर जय जय देव हरे।

तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए । कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे।

श्री जयदेवकवेरुदितमिदं कुरुते मुदम् । मंडलमन्जुलगीतं जय जय देव हरे।

।। शिव स्मरणम् ।।

जुगीया लंगटा कर मे ख़पटा दोय कान फटा

सिर तीन जटा ओढे मृगछाल गले रुण्डमाल

विराज भाल सुभग जटा गौरी अर्द्धंग जटा

बहे गंग विभूति भुजंग सदा लपटा

चिन्तामणि ध्यान धरे कोऊ आन मेरो

मन भावन यो लंगटा ।।१।।

।। भवान्यष्टकम् ।।

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता

न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।

न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।१।।

भवाब्धावपारे महादु:खभीरु:

पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्त:।

कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं। गतिस्त्वं ।।२।।

न जानामि दानं न च ध्यानयोग

न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम्।

न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्। गतिस्त्वं ।।३।।

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं

न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।

न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातर्गतिस्त्वं ।।४।।

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः

कुलाचारहीनः कदाचारलीनः।

कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहम्। गतिस्त्वं ।।५।।

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं

दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।

न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये। गतिस्त्वं ।।६।।

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे

जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।

अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि। गतिस्त्वं ।।७।।

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो

महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।

विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहं गतिस्त्वं ।।८।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं भवान्यष्टकं सम्पूर्णम्।

(12)

।। श्रीसरस्वतीस्तोत्रम् ।।

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।१।।

आशासु राशीभवदङ्गवल्ली –
भासैव दासीकृतदुग्धसिन्धुम् ।
मन्दास्मितैर्निन्दितशारदेन्दुं
वन्देऽरविन्दासनसुन्दरि त्वाम् ।।२।।

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ।।३।।

सरस्वतीं च तां नौमि वागधिष्ठातृदेवताम् ।
देवत्वं प्रतिपद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः ।।४।।

पातु नो निकषग्रावा मतिहेम्नः सरस्वती।
प्राज्ञेतरपरिच्छेदं वचसैव करोति या ।।५।।

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ।।६।।
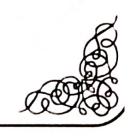
।। श्रीकृष्णाष्टकम् ।।

भजे व्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं
स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव नन्दनन्दनम्।
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं
अनङ्गरङ्गसागरं नमामि कृष्णनागरम् ।।१ ।।

मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनं
विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम्।
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णवारणम् ।।२ ।।

कदम्बसूनकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलं
व्रजाङ्गनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम्।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकम् ।।३ ।।

सदैव पादपङ्कजं मदीयमानसे निजं
दधानमुक्तमालकं नमामि नन्दबालकम्।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम् ।।४ ।।

।। मधुराष्टकम् ।।

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।१।।

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।२।।

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।३।।

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।४।।

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम् ।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।५।।

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा ।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।६।।

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं मुक्तं मधुरम् ।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।७।।

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा ।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ।।८।।

इति श्रीमद्वल्लभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्।
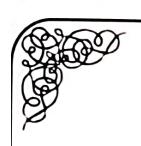
।। श्री गणेश कल्पवृक्ष स्तोत्र ।।

ॐ हेमजा सुतम् भजे गणेशमीश नन्दनम्।
एकदन्त वक्र तुण्ड नागयज्ञ सूत्रकम् ।
रक्त मात्र धूम्र नेत्र शुक्ल वस्त्र मण्डितम्।
श्री कल्पवृक्ष भक्त रक्षनमोऽस्तु ते गजाननम् ।।१।।

पाशपाणि पद्मपाणि मूसका वरोहरणम्।
अग्निकोटि सूर्य ज्योति मोद हस्त पर्वलम्।
चित्रजाल हस्तमाल भाल चन्द्र शोभितम् ।।२।।
श्री कल्पवृक्ष ...

विश्व वीर्य विश्व धार्य विश्व कर्म निर्मितम्।
विश्व कर्ता विश्व धर्ता यत्र तत्र पूजितम्।
चतुर्मुखम् चतुर्भुजं च सेवितम् चतुर्युगमं ।।३।।
श्री कल्पवृक्ष ...

भूत भव्य हव्य कव्य भूरि भाग राजितम्।
दिग्पाल लोकपाल ज्वालकाल वंदितम्।
पूर्ण ब्रह्म सूर्पकर्ण पुरुषे पुरात कम् ।।४।।
श्री कल्पवृक्ष ...

रिद्धि वृद्धि अष्ट सिद्धि नव निधि दायकम्।
यज्ञ कर्म सर्व धर्म वर्ण वर्ण चर्चितम्।
भूत बुद्धि तुष्टि पुष्टि ज्ञान वै दिगम्वरम् ।।५।।
श्री कल्पवृक्ष ...

पञ्चरत्न मिदं स्तोत्रं प्रात: सन्ध्या अर्धरात्रिकम्।
व्यासेन कथितं तोयं मनो वांछित नरोत्तमम् ।।६।।

शिव स्तुति

सदा शिव सर्व वरदाता, दिगम्बर हो तो ऐसा हो
हरे सब दुःख भक्तन के, दया कर हो तो ऐसा हो

शिखर कैलाश के ऊपर, कल्पतरुओं की छाया में
रमे नित संग गिरजा के, रमणधर हो तो ऐसा हो , सदा शिव.......

शीश पर गंगा की धारा , सुहावे भाल में लोचन
कला मस्तक में चन्द्र की, मनोहर हो तो ऐसा हो , सदा शिव.......

भयंकर जहर जब निकला, क्षीर सागर के मंथन से
धरा सब कंठ में पीकर, विषधर हो तो ऐसा हो , सदा शिव.......

सिरों को काट कर अपने, किया जब होम रावन ने
दिया सब राज्य दुनिया का, दिलावर हो तो ऐसा हो , सदा शिव.......

किया नंदी ने जा बन में, कठिन तप काल के डर से
बनाया खास गण अपना, अमर कर हो तो ऐसा हो , सदा शिव.......

बनाये बीच सागर में, तीनपुर दैत्य सेना ने
उड़ाये एक ही शर से, त्रिपुर हर हो तो ऐसा हो , सदा शिव.......

दक्ष के यज्ञ में जाकर, तजि जब देह गिरिजा ने
किया सब ध्वंस पलभर में, भयंकर हो तो ऐसा हो , सदा शिव.......

देव, नर, दैत्य गण सारे, जपे नित्य नाम शंकर का
वो 'ब्रह्मानंद' दुनिया में, उजागर हो तो ऐसा हो , सदा शिव.......

शिवकृत राम स्तुति

जय राम रमारमनं समनं । भवताप भयाकुल पाहि जनं ।
अवधेस सुरेस रमेश बिभो । सरनागत मागत पाहि प्रभो ।।
दससीस बिनासन बीस भुजा । कृत दूरि महा महि भूरि रुजा ।
रजनीचर बृंद पतंग रहे । शर पावक तेज प्रचंड दहे ।।
महि मंडल मंडन चारुतरं । धृत सायक चाप निषंग बरं ।
मद मोह महा ममता रजनी । तम पुंज दिवाकर तेज अनी ।।
मनजात किरात निपात किए । मन लोग कुभोग सरेन हिए ।
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे । बिषया बन पावँर भूलि परे ।।
बहु रोग बियोगन्हि लोग हुए । भवदंघ्रि निरादर के फल ए ।
भव सिंधु अगाध परे नर ते । पद पंकज प्रेम न जे करते ।।
अति दीन मलीन दुखी नितहीं । जिन्ह कें पद पंकज प्रीति नहीं ।
अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें । प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें ।।
नहिं राग न लोभ न मान मदा । तिन्ह कें सम बैभव वा बिपदा ।
एहि ते तव सेवक होत मुदा । मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ।।
करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ । पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ ।
सम मानि निरादर आदरही । सब संत सुखी बिचरंति मही ।।
मुनि मानस पंकज भृंग भजे । रघुबीर महा रनधीर अजे ।
तव नाम जपामि नमामि हरी । भव रोग महागद मान अरी ।।
गुन सील कृपा परमायतनं । प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ।
रघुनंद निकंदय द्वंद्वघनं । महिपाल बिलोकय दीनजनं ।।

दोहा- बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग ।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग ।। 24 (क)।।
बरनि उमापति राम गुन हरषि गए कैलास।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब बिधि सुखप्रद बास ।। 24 (ख)।।

मुद्रक :- गुरूकृपा ऑफसेट प्रिन्टर्स जैसलमेर 9413866522, 02992-256101

सर्वविघ्न विनाशाय सर्वकल्याण हेतवे ।
पार्वती प्रियपुत्राय गणेशाय नमो नमः ॥

॥ अथः प्रदान संकल्पम् ।।

तिथिर्विष्णुस्तथा वारो नक्षत्रं विष्णुरेव च ।
योगश्च करणं चैव सर्वं विष्णुमयं जगत् ॥

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे तत्रादौ श्रीश्वेतवाराह कल्पे सप्तमें वैवस्वतमन्वतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे कन्याकुमारिकानां क्षेत्रे श्री महानद्योगंगा यमुनयोः पश्चिमे तटे नर्मदाया उत्तरे तटे मरुप्रदेशे राजस्थान प्रदेशान्तर्गत कपिलसरोवरे तीर्थान्तर्वर्ति बीकानेरक्षत्रे समीपे श्रीडूंगरगढ़ जनपदानन्तर्गते दुलचासरनाम्नि ग्रामे, यजमानस्य स्वभवने (मंदिरे प्रांगणे) स्व. अमुकनाम्नी कार्य व्यापारे श्रीशालिवाहन शके अस्मिन् वर्तमाने अमुक नाम संवत्सरे अमुकायने अमुकर्तौ महामांगल्येप्रदमासानां उत्तमेमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे, अमुक राशि स्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देव गुरौ शेषेशु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थान स्थितेषु एवं गुणविशेषेण विशिष्टायां पुण्यतिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नमुक शर्माहं (वर्मा गुप्ता दासोऽहं) श्रीगणेशाम्बिका कुल देवता कुलदैव्या प्रसन्नार्थ द्वारा यजमानस्य आत्मनः सपुत्रपुत्रीस्त्रीबान्धवस्य श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रहकृतराजकृतसर्व विधपीडानिवृत्तिपूर्वकं नैरुज्यदीर्घायुः पुष्टिधनधान्यसमृद्ध्यर्थं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं, धर्मार्थकाममोक्ष फलावाप्त्यर्थं ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्त्यर्थम्, प्राप्त लक्ष्म्याश्चिरकाल संरक्षणार्थं सकलमन ईप्सित कामना संसिद्ध्यर्थं लोके सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजय लाभाद प्राप्त्यर्थम् मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकल दुरितोप शमनार्थे मम सभार्यास्य सपुत्रस्य स बांधवस्य अखिल कुटुम्ब सहितस्य समस्त भय व्याधि जरा पीड़ा मृत्यु परिहार द्वारा, आयुरारोग्यै-श्वर्याभिवृद्ध्यर्थम्, परकृत परमंत्र परतंत्र परयंत्र परकृत्या 'प्रयोग छेदनार्थ द्वारा गृहे सुख शांति प्राप्त्यर्थं, मम जन्म कुण्डल्यां, वर्षकुण्डल्यां, गोचर कुण्डल्यां, दशा विंशोत्तरी कृत सर्व कुयोग निवारणार्थं मम जन्मराशीरखिल कुटुम्बस्य वा जन्म राशे सकाशाद्ये केचिद्विरुद्ध चतुर्थाष्टम द्वादश स्थान स्थित क्रूर ग्रहास्तैः सूचितं सूचयिष्यमाणं च यत्सर्वारिष्ट तद्विनाश द्वारा नवम एकादश स्थान स्थित वच्छुभफल प्राप्त्यर्थं आदित्यादि नवग्रहानुकूलता सिद्ध्यर्थम् अस्य क्षेत्रस्य दैविक अधिदैविक-भौतिक अधिभौतिक बालग्रहादि भूतप्रेतच्छाया उपद्रव, तापत्रय शमनार्थम् अधोगति जीवानां मोक्षार्थे श्रीमद्भागवद्गीता पाठे प्रधानपीठस्थ श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवता प्रसन्नार्थे श्रीदुर्गासप्तशती (अमुक मंत्रेण संपुटित द्वारा) पाठ अमुक संख्या परिमिति (अमुकमन्त्र) जपाख्य कर्मणा नानानां गोत्रैः ब्राह्मणैः द्वारा चाहं करिष्ये अमुक दिवसीय अनुष्ठान मध्ये अमुक दिवसे अनुष्ठान प्रारम्भ करणार्थे तदङ्गत्वेन निर्विघ्नतासिद्धि द्वारा आदौ गणपत्यादि आवाहित प्रतिष्ठित देवी देवानां पूजनं अर्चनं यथा ज्ञानेन् यथा मिलोतोपचार द्रव्यैन् चाहं करिष्ये ।

!! मंगल प्रार्थना !! पं श्रीराधे जोशी !!

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे ।
यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम् ॥

गणपति परिवारं चारुकेयूरहारं ,
गिरिधर वरसारम् योगिनी चक्र चारम्।
भवभय परिहारं दुःखं दारिद्र्य दूरं ,
गणपतिमभिवन्दे वक्रतुण्डावतारम् । ।४ । ।

हेरम्बो सुरपूजितो गुणामयो लम्बोदरः श्रीयुतो ।
श्री शुण्डो गजकर्णाको गजमुखो गम्भीर विद्या गुणो।।
गौर्यापुत्र गणेश्वरो हर सुतो गोविन्द पूजा कृतो ।
यात्रा जन्मविवाह कार्य समये कुर्वन्तुनो मङ्गलम् ।।

श्वेतांगंश्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगैः ।
क्षीराब्धौरत्नदीपैः सुरनरतिलकं रत्नसिंहासनस्थम् ।।
दोर्भिः पाशांकुशाब्जाभयवरदधतं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रम् ।।
ध्यायेच्छान्त्यर्थमीशं गणपति ममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम्।।२।।

!! देवी स्तुति !!

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती, काली कला मालिनी ।
मातंगी विजया जया भगवती, देवी शिवा शाम्भवी ॥
शक्तिः शंकर वल्लभास्त्रिनयना, वागवाहिनी भैरवी ।
ह्रींकरी त्रिपुरा पूरा भगवती, माता कुमारेश्वरी ।।

मुक्ताविद्रुम हेमनील धवलच्छायै मुखैस्त्रीक्षणैः।
युक्तामिन्दु निबद्ध रत्नमुकुटां तत्त्वर्थ वर्णात्मिकाम्।।
गायत्री वरदाभयांकुशकुशाः शुभ्रं कपालं गुणं।
शंखं चक्रमथारविन्द युगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥

माता भवानी जनको भवानी, बूर्भवानी भगिनी भवानी।
गोत्रं भवानी स्वकुलं भवानी, बिना भवानी न हि किंचि दस्ति।।

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां, न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः।
गौ ब्राह्मणेभ्यो शुभमस्तु नित्यं, लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ।

शक्ति शुम्भ निशुम्भ दैत्य दलिनी या सिद्ध लक्ष्मी परा ।
या दुर्गा नवलक्ष कोटि मुक्ति संहिता माम् पातु विश्वेश्वरी ।।

ब्रह्माणी कमलेन्दुसौम्यवदना माहेश्वरी लीलया ।
कौमारी रिपुदर्पनाशनकारी चक्रायुधा वैष्णवी ।।
वाराही घनघोरघर्घरमुखी चैन्द्री च वज्रायुधा ।
चामुण्डा गणनाथरुद्रसहिता रक्षन्तु नो मातरः।।

बालशुक श्रीराधेजी महाराज

!! मंगल प्रार्थना !! पं श्रीराधे जोशी !!

|| महर्षि गौतम ध्यान ||

नमामी धर्म विज्ञानं वैराग्यैश्वर्य शालिने ।
निधये वाग्र विशुद्धिनां अक्षपादाय तापिने ।।
गुर्जरगौड़विप्राणाम् आचार्यः मुनि शत्तमः ।
न्यायशास्त्र प्रणेतां प्रणेभ्यो गुरुः गौतमः ॥

|| मंगलाचरण ||

हेरम्बं गिरिजापतिं च गिरिजां स्कन्दं गुरुं भारतीम् ।
श्रीभानुं पितरं निज च जननीं, विद्यागुरून सर्वतः ।।

|| नारायण ध्यान ||

योन्तः प्रविश्य मम वाचमीमां प्रसुप्तां ,
संजीवयत्य खिलशक्तिधरः स्वधामना ।
अन्यांश्च हस्तचरणश्रवणत्वगादीन
प्रणान्नमो भगवते पुरुषाय तुभ्यम् ।।

|| लक्ष्मी ध्यानम् ||

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिः स्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेमकुम्भैः ।
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ।।

||शिव ध्यान||

जगज्जाल-पालं कचत्-कण्ठ- मालं शरच्चन्द्र-भालं महादैत्य-कालम् ।
नमो नील कायं दुरावार मायं सुपद्मना सहायं भजेऽहं भजेऽहम् ।।

सानन्दमानन्दवने वसन्तं आनन्दकन्दं हतपापबृन्दम् ।
वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये ॥

|| चतुष्टियोगनी ध्यान ||

चतुःषष्टि स्माख्याता योगिन्यो हि वरप्रदा |
त्रिलोक्यपूजिताः नित्यं देवमानुष योगिभिः ।।

राजस्थानमरुप्रदेशजननीं कोटासरे राजितां,
मानानामपितामहीं भगवतीं,लक्ष्मीमुपाध्यायजां ।
चामुण्डाऽङ्कसुशोभितां रविनिभां शक्तिं महायोगिनीम् ,
देवीं विप्रेकुलात्मजां सुविमलां सेवेसतीमम्बिकाम् ।।
(शार्दूलविक्रीडितम् छंद)

||विप्रार्चन ||

विप्र प्रसादात् धरणी धरोहम् विप्र प्रसादात कमला वरोहम्।
विप्र प्रसादात् जिताजितोहम् विप्र प्रसादात् मम नाम रामम्।।

बालशुक श्रीराधेजी महाराज

!! मंगल प्रार्थना !! पं श्रीराधे जोशी !!

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ॥

कर कंकण केश जटा मुकुटम् , मणि माणिक मौक्तिक आभरणम्

गज नील गजेन्द्र गणादि पथिम् , मम तुष्ट विनायक हस्ति मुखम् ॥

तम्बूल पैत आननं, कपूर सोहे पाननं ।
चढ़ात लेख भाभिनी, शरीर ईस कामिनी ॥
निथेर आड संदियं, गुलाल कीन विदीयं ।
लगाय ठीक अन्जनं, सुसोहे नैन कंजनं ॥

सुधा पियास बिम्लवास अग्न रूप जोगिनी ।
सुरा जटाकटा कलाय कामधेतु धोगनी ॥
कराल केस नेस बाल भूत चक्र भंजनी ।
भजो श्रीमात हिंगलाज निरम्मला निरंजना ॥

भवभय हारिणी कष्ट निवारिणी , शरणागत दो नमो नमः ।
शिव भामिनी साधक मन हारिणी , हरसिद्धि शक्ति नमो नमः ।

शक्तिस्वरूपां धनबुद्धिदात्रीं ,गौसेविकां त्वां च पितामहीं त्वाम् !
दूर्गांशिमानां कुलसुंदरीं त्वां,सतीस्वरूपां प्रणमामि नित्यं !!

तुम तो अपार मैया , सागर मई शान्त ,
धुली में पड़ा में दूर छोटा सा फुंवारा हूँ ।
चाहे मिलन किहै , जो स्पंधन अबाध्य गति मेरी ,
नही एक आद्य पलखा पथिका पड़ा हारा हु ॥
अखर समुझ मुझे गोद में बिठालो माँ ।
दोषी हूँ मनुज पर तनुज तुम्हारा हूँ ॥

सुण्डाळा दुख भंजना, सदा जो बालक भेष।
सारू_याँ पैलां सिंवरियाँ , गौरीनन्द गणेश ।।

गजानंद महाराज पधारो, पूजन की तैयारी है ।
आओ आओ बेगा आओ, चाव दरस को भारी है॥

थे आवो ज़द काम बणेला, था पर म्हारी बाजी है ।
रणत भंवर गढ़ वाला सुणलो, चिन्ता म्हाने लागि है ।
देर करो मत ना तरसाओ, चरणा अरज ये म्हारी है ॥

गजानन्द महाराज पधारो..॥

रीद्धी सिद्धी संग आओ विनायक, देवों दरस थारा भगता ने ।
भोग लगावा ढोक लगावा, पुष्प चढ़ावा चरणा मे ।
गजानंद थारा हाथा मे, अब तो लाज हमारी है ॥

गजानन्द महाराज पधारो..॥

भगता की तो विनती सुनली, शिव सूत प्यारो आयो है ।
जय जयकार करो गणपति की, म्हारो मन हर्शायो है ।
बरसेंगा अब रस कीर्तन मे, भगतौ महिमा भारी है ॥

श्रीराधेजी भारद्वाज (हुकम जोशी)
(पण्डित कथावाचक)
ग्रा.दुलचासर बीकानेर .राज.
अध्ययन. मलुकपीठ गुरूकुल वृन्दावन
सम्पर्क सूत्र- 8769619655
sriRadheji Bhardwaj
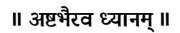
असिताङ्गोरुरुश्चण्डः क्रोधश्चोन्मत्तभैरवः ।

कपालीभीषणश्चैव संहारश्चाष्टभैरवम् ॥

ॐ फणिधर फणिनाथो देव देवाधिनाथो,
क्षितिपति क्षितिनाथो वीर बेताल नाथो |
निधिपति निधिनाथो योगिनी योगनाथो,
जयति बटुक नाथः सिद्धि दः साधकानाम ॥

वन्दे बाल विपातराशिं कुंडलोद सदासिव वत्र,
दिव्या कर्नवमणि भये किंकणी नुपुराढ्यम् ।
दिप्ताकारं विविधा बसनं सुप्रसन्न त्रिनेत्रं,
हस्ताब्य्याभ्यां बटुक मनिश शुनदडौ दधीनाग ।।

रक्ताम्बरं ज्वलनपिंग जटाकलापा ,
ज्वालवली कुटिल चन्द्रधर प्रचंडन ।
बाला कोटि फलकां चनवापुवर्ण ,
देवीसुतं बटुक नाथमहं नमामी ।।

बाबो लट लटियालो पट पटियालो घुघर बाजे छमाक छम ।
छिं-छिं छम छि छि छम किरि किरि धमाक धम ।।
बाबो प्याला पीवे नशा जमावे भुतो में जावे सर्ण सर्ण ।
छिं-छिं छम छि छि छम किरि किरि धमाक धम ।।
बाबो बुटियों पीवें नशा जमावें, पापियों ने फेंकें फर्ण फर्ण ।
छिं-छिं छम छि छि छम किरि किरि धमाक धम ।।
ऐ बावन भेरू चौसठ योगनि नृत्य करते है छमाक छम ।
छिं-छिं छम छि छि छम किरि किरि धमाक धम ।।
बाबो (भैरव) भक्तो ने सदा सुवायो राखो बाबा म्हे थोरा चेला रेवो हरदम।
बाबा थोरी पुजा में रेवो हरदम ।
छिं-छिं छम छि छि छम किरि किरि धमाक धम ।।

ॐ ह्रीं बटुकाय
आपदुद्धारणाय कुरु कुरु
बटुकाय ह्रीं ॐ।

बालशुक श्रीराधेजी महाराज

॥ अष्टभैरव ध्यानम् ॥

असिताङ्गोरुरुश्चण्डः क्रोधश्चोन्मत्तभैरवः ।

कपालीभीषणश्चैव संहारश्चाष्टभैरवम् ॥

जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ।
जय काली और गौर देवी कृत सेवा ॥
जय भैरव देवा...

तुम्ही पाप उद्धारक दुःख सिन्धु तारक ।
भक्तो के सुख कारक भीषण वपु धारक ॥
जय भैरव देवा...

वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूल धारी ।
महिमा अमित तुम्हारी जय जय भयहारी ॥
जय भैरव देवा...

तुम बिन देवा सेवा सफल नहीं होवे ।
चौमुख दीपक दर्शन दुःख खोवे ॥
जय भैरव देवा...

तेल चटकी दधि मिश्रित भाषावाली तेरी ।
कृपा कीजिये भैरव, करिए नहीं देरी ॥
जय भैरव देवा...

पाँव घुँघरू बाजत अरु डमरू दम्कावत ।
बटुकनाथ बन बालक जल मन हरषावत ॥
जय भैरव देवा...

बटुकनाथ जी की आरती जो कोई नर गावे ।
कहे धरनी धर नर मनवांछित फल पावे ॥
जय भैरव देवा...

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ।

||प्रार्थना||

रिद्धि दे सिद्धि दे अष्ट नव निधि दे वंश में वृद्धि दे वाकवानी।
हृदय में ज्ञान दे चित्त में ध्यान दे अभय वरदान दे शम्भूरानी ।।
दुःखों को दूर कर सुख भरपूर कर आशा सम्पूर्ण कर दास जानी।
सज्ज्ञन सूं मीत दे कुटम्ब सूं प्रीत दे जग में जीत दे मां भवानी ।।

||कुलदेवी भोग स्तुति||

मैया दीज्यो ए प्रसादी हाथ बढ़ाए२, बाहर उभा टाबरिया।

म्हें हां थारा टाबर मैया तू हैं म्हारी माय।
कुलदेवी चामुण्डा अम्बा , लुळ लुळ लागूं पाय ।।
अम्बा दीज्यो ए२. चरणामृत अमृत दान ।।1।।

आत्मनः कुलदेवता

चरणामृत चरणा को दीज्यो केसर चन्दन साथ।
दूध पतासा मिश्री दीज्यो मीठा रहसी हाथ ।।
अम्बा दीज्यो ए२ मेवा रां भर भर थाळ ।।2।।

अन्न धन रा भंडार भरज्यो लक्ष्मी दीज्यो अपार।
सभी रकम री वस्तु मैया घर में दीज्यो बसाय ।।
अम्बा दीज्यो ए२. सोने रो नोसर हार ।।3।।

थारी चरणा री भक्ति दीज्यो चोखो दीज्यो ज्ञान।
भरी सभा पंचा में मैया म्हारो रखज्यो मान ।।
मैया दीज्यो ए२. नैणा री ज्योत अपार ।।4।।

टाबरिया ने गोद झडूलो देय बुलाइज्यो आप।
अत्रिदास शरण में थारी भूल करिज्यो माफ।।
मैया दीज्यो ए२. सेवा भक्ति रो सार ।।

||स्तुति ||

शैल सुतानों में वेद पुराणों में ध्यान धर्या दुःख को धरती हो ।
जब भक्तन पर भीड़ पड़े माँ अष्टभुजा बल से हरति हो ।।
लाल ध्वजा शिर छत्र विराजत सिंह चढ़े वन में फिरती हो ।
मेरी बेर यूँ देर भई जगदम्ब विलम्ब कँहा करती हो ।।

!! मंगल प्रार्थना !! पं श्रीराधे जोशी !!

।।दोहा।।
उठता पैलां आवड़ा,माजी थारौ नाम।
निसरै मुख सूं करनला, अवनी आठों याम।।

ओ थाने विनती करूं बारंबार ।
जगदम्बा म्हारी अरज सुनो ।।
ओ अरज सुनो ए मैया विनती सुनो । थाने विनती... ।।

बीकाजी ने वचन दीनो माँ , गड रे नीम लगाई ।
देशनोक में भवन चीणायो,
बिकाणो नगर बसाए ।।
थाने विनती ...

शेखोजी मुल्तान कैद में, घर बाई रो ब्याव ।
बनके सव्वली पकड़ पंजा में, फेरा सूं पेली रे पोंचाय ।।
थाने विनती...

गंगासिंहजी रे रही मदद में, अंग्रेजों की मांई ।
अंग्रेजों ने कुबद कमाई, सूतोड़ा सिंह ने जगाई ।।
थाने विनती...

सिंह गरज कर आयो भूप पर, हाथ लई तलवार ।
मेहर भई करणी मां थारी, सिंगडा ने चीर भगाय ।।
थाने विनती...

गांव सियाणो जात ब्राहमण, दलुराम जस गाय ।
निज भक्तां पर कृपा कर ज्यो, देशनोक वाळी माय ।।
थाने विनती ...

।। दोहा ।।
सुख देणो दुःख मेटणो , माँ करणी रो नाम ।
चरण शरण दे चरणी , बार बार प्रणाम ।।

बालशुक श्रीराधेजी महाराज

ॐ हं हनुमते नमः

झालर शंख नगाड़ा बाजे रे ।
सालासर रे मंदिर में ।।

भारत राजस्थान में, सालासर एक गाँव ।
सूरज सामे बण्यो देवरो, बालाजी रो धाम ।।
ज्लाल धजा लहरावे ।।

नारेळा री गिणती कोनी, सुमिरण छत्र अपार ।
दूर देशा सूं आवे यात्री आवे नर और नार ।।
बाबो बेड़ा पार लगावे रे ।।

चेत सुदी पूनम रो मेलो, भीड़ लगे अति भारी ।
नर नारी थारा दर्शन करवा, आवे बारी बारी ।।
बाबो अटकीय कारज सारे रे ।।

रामदूत अंजनी के लाला, धरो हमेशा ध्यान ।
सेन सिंह शरणा रो साकर, दो भक्ति वरदान,
थारे हाथ जोडोला लागे रे ।।

।। सिद्ध मंत्र ।।

ॐ नमो हनुमते-रूद्रावताराय परयन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-त्राटक नाशकाय
सर्वज्वर च-छेदकाय सर्वव्याधि-निकृन्तकाय सर्वभय-प्रशमनाय
सर्वदुष्ट-मुख-स्थम्भनाय सर्वकार्य- सिद्धि-प्रदाय रामदूताय स्वाहा ।।

विशेष :- इस मंत्र को किसी एकान्त में बैठकर या पंच मुखी हनुमान प्रतिमा आगे बैठकर 41 दिन जपने से सर्व दुःख दूर होते हैं।

सुग्रीव मित्रं परम् पवित्रं सीताकलत्रं नवमेघगात्रं ।
कारुण्य पात्रं शतपत्रनेत्रं श्रीराम चन्द्रं सततं नमामि ।।

-: भांगड़ली :-

भोलानाथ अमली, शिवशंकरअमली, जटाधारी अमली,
बागां बिच भांगड़ली बुहाय राखूंली।।रे छणाय राखूंली
रत्न कटोरे विजिया हाजिर राखूंली....... भोलानाथ
कांई बोऊँ काशीजी में कांई जी प्रयाग।
कांई बोऊँ हरकी पेड़ी कांई जी कैलाश।। भोलानाथ
काशीजी में केशर बोऊँ चन्दन प्रयाग।
हर की पेड़ी विजिया बोऊँ धतुरो कैलाश।। भोलानाथ
कांई मांगे नांदियोजी कांई जी गणेश।
कांई मांगे भोलो शम्भु जोगियां को भेष।। भोलानाथ
दुर्बा मांगे नांदियोजी मोदक गणेश।
विजिया मांगे भोलो शम्भू जोगियां को भेष।। भोलानाथ
घोटे घोटे नांदियोजी छाणत गणेश।
भरभर प्याला देवे गवरजा पीवे जी महेश।। भोलानाथ
आकड़े की रोटी पोऊँ धतुरे को साग।
विजिया की तरकारी छमकूँ जीमो भोलानाथ।। भोलानाथ
चन्दन चढ़ाऊँ कमल चढ़ाऊँ ओर चढ़ाऊँ बेल।
धतुरे को फूल चढ़ाऊँ गंगाजी को नीर।। भोलानाथ
नाचे नाचे नांदियोजी नाचे जी गणेश।
नाचे म्हारो भोलोशम्भू जोगियां को भेष।। भोलानाथ
निर्धनियां तो धनड़ो मांगे राजा मांगे रूप।
कुष्टी मांगे निर्मल काया बाँझ मांगे पूत।। भोलानाथ
निर्धनियां न धनड़ो देव राजा न देव रूप।
कुष्टी न देव निर्मल काया बाँझ न देव पूत।। भोलानाथ
आगे आगे नांदियो लारे रे गणेश।
बीच बिचाले चले गवरजा जोगिणीं को भेष।। भोलानाथ
काख में तो झोली डंडा हाथ में त्रिशूल।
नन्दी की असवारी सोहे नशे में भरपूर।। भोलानाथ
कैलाश पर्वत तपे महादेव नन्दियो चेलो साथ।
भक्तसभी भगवान से मांगे भक्तिज्ञान वैराग्य।। भोलानाथ
भांगड़ली जो गाव बांरो घर है कैलाश।
ऊँचा ऊँचा महल मालिया बेकुंठा में वास।। भोलानाथ

।। भजन ।।

डमरू वाले बाबा तुमको आना होगा,
डम डम डमरू बजाना होगा,
माँ गोरा संग गणपति जी को लाना होगा,
डमरू वाले बाबा तुझको आना होगा,
डम डम डमरू बजाना होगा।।टेर।।
सावन के महीने में काँवड़ लेके आयेंगे-२
पावन गंगा जल से बाबा तुझको नहलायेगें,
कावड़ियो को पार लगाना होगा, डम डम डमरू.... ।।१।।
भांग धतुरा दूध बाबा तुमपे चढ़ायेगें,
केशरिया चंदन से बाबा तिलक लगायेंगे,
भगतो का कष्ट मिटाना होगा, डम डम डमरू........ ।।२।।
तुम तो भोले दानी बाबा, जग से निराला है,
हाथों में त्रिशूल गल सर्पो का माला है,
नान्दिये पर चढ़कर आना होगा, डम डम डमरू........ ।।३।।
जैसा भी रखोगे बाबा वैसा ही मंजूर है,
तेरी दया तो बाबा पाना भी जरूर है,
भगतों को गले से लगाना होगा, डम डम डमरू........ ।।४।।
माँ गोरां संग गणपति जी को लाना होगा,
डमरू वाले बाबा तुमको आना होगा।।

!! मंगल प्रार्थना !! पं श्रीराधे जोशी !!

ॐ नमो गुरूभ्यो गुरू पादुकाभ्यां , नमः परेम्य पर पादुकाभ्यां ॥
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो, नमो नमः श्री गुरुपादुकाभ्यां ॥

॥ महर्षि गौतम आरती ॥

ओम जय गौतम त्राता, स्वामी जय गौतम त्राता ।
ऋषिवर पूज्य हमारे मुद मंगल दाता ॥ ॐ जय गौतम...

द्विज कमल दिवाकर, परम् न्यायकारी ।
जन कल्याण करन हित, न्याय रच्यो भारी ॥1॥ ॐ जय गौतम...
पिप्पलाद सूत बाहर, तुम्हें शिष्य भये ।
वेद शास्त्र दर्शन में पूरन कुशल भये ॥2॥ ॐ जय गौतम...

गुर्जर करण विनय पर,तुम पुष्कर आये।
सभी शिष्य सूत गण को, तुम संग में लाये ॥3॥ ॐ जय गौतम....

अनावृष्टि से देख्यो, संकट आय परयो ।
भगवन आप दया करि सब को कष्ट हरयो ॥4॥ ॐ जय गौतम...

पुत्र प्राप्ति के कारण, नृप के यज्ञ कियो ।
यज्ञ देव आशीष से, सुतको जनम भयो ॥5॥ ॐ जय गौतम...

भूप मनोरथ पुरयो, चिंता दूर करी ।
प्रेत राज पामर की, निर्मल देह करी ॥6॥ ॐ जय गौतम...

अक्षपाद गौतम की आरती जो कोई गावे ।
ऋषि की पूर्ण कृपा से, मन वांछित फल पावे ॥ 7 ॥ ॐ जय गौतम....

॥ आरती श्री गायत्री माता ॥

जय गायत्री माता , मैया जय सावित्री माता ।
वेद जननि वेदात्मा, विद्या विख्याता ।। गायत्री ।

रक्तवर्ण शुभ प्रातः ब्रह्मा रूपधरा ।
हंसारूढ़ा भुजमुख चार चारु अपरा ।। गायत्री ।।

मध्यान्हे हरि रूपा नीलवर्ण शुभदा ।
गरूड़वाहिनी चतुरा, चतुर्बाहु सुखदा ।। गायत्री ।।

सायं वृषभारूढ़ा, शिवरूपा श्वेता ।
सूर्यकोटि सम आभा चतुर्भुजोपेता ।। गायत्री ।।

पंचमुखा दशहस्ता , शुचि रस-रस-नयना ।
स्फटिक समुज्ज्वंलवर्णा, कल करूणा अयना ।। गायत्री ।।

अघहारिणि भवतारिणि सुखकारिणि परमा ।
ब्रह्माणी, रूद्राणी, शुभलक्षणा रमा ।। गायत्री ।।

दुरित दुःख दुर्गति सब, दुर्मति दूर करो ।
शुचितम मम उरमें मां, विमला भक्ति भरो ।। गायत्री ।।

माँ गायत्री जी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत ब्रह्मादिक ऋषिमुनि , ब्रह्मतेज पावे ।। गायत्री ।।

बालशक श्रीराधेजी महाराज

।।श्री भागवत जी की आरती।।

श्री भागवत मुगत की दाता, जगत की माता, भवसागर की नौका है जी।
श्री राम मिलन का मौका है जी, श्री कृष्ण मिलन का मौका है जी।।टेर।।
क्षीर सागर में सुता रधुनंदन नाभि से कमल उपजायों हैं जी।
कमल उपजाय ब्रह्माजी ने भेज्या, ब्रह्मा श्रुष्टि रचायी है जी।।श्री।।
ब्रह्मा बीज दीयो नारद को, नारद वृक्ष लगायो है जी।
वेद व्यास जी करी पालना, शुकदेव जी प्रकट कीन्ही है जी।। श्री।।
श्री भागवत जी के द्वादश डाला, तीन सौ पैंतीस साखा है जी।
अठारह हजार बारें सांख्य योग कहीजे, ओर जो पत्र बिसेखा है जी।।श्री।।
पान पुष्प की गिनती नाही, सुखदेव जी लेखा लीनो है जी।
पान पान में अमृत बरसे, मुनियन के मन भायो है जी।। श्री।।
कहे राजा परिक्षित, सुनो सुकदेव जी, यह किन प्रकट देखी है जी।
जि बाँची तिन मोह बताओ, फिर नहीं पांवा मौका है जी।।श्री।।
कहे सुकदेव जी सुनो परीक्षित, गंगा के घाट बंचायी है जी।
गौकरण धुन्धकारी कारण, श्री भागवत सुनायों है जी।।श्री।।
ज्ञान वैराग्य भगती के पुत्र, जिनमें प्रकट देखी है जी।
सब मिलकर देवी देवता पधारे ऋृषि मूनि ध्यान लगायो है जी।।श्री।।
काम क्रोध मद लोभ छोंड दो, नहीं तो रोगे रीता है जी।
यही जन्म में पार उतर जावों भागवत ज्ञान अनोखा है जी।।श्री।।
बैठ विमान बैकुंठ सिधाये, हम भी पावें मौका है जी।
सुण राजा परीक्षित ध्यान लगायो, सुणी है सप्ताह गीता है जी।।श्री।।
अठ्ठयासी हजार मुनियन के माही सुकदेव जी बांच सुनायी है जी।
सात दिन न बिच मुक्ति पायी, तुरन्त सिंघासन आयो है जी।।श्री।।
हाथ जोड़ कर करी रे बिनती, चरणो में शीश नवायो है जी।
बैठ विमान बैकुण्ठ पधारो, पुष्पन मेह बरसायो है जी।।श्री।।
सुनी भागवत नर और नारी, वो ही बैकुण्ठ सिधायो है जी।
कृपा करो श्री कृष्ण मुरारी हमे भी पांवा मुक्ति है जी।।श्री।।
श्री भागवत मुगत की दाता, जगत की माता, भवसागर की नौका है जी।
श्री मिलन की नौका है जी, श्री कृष्ण की मिलन का मौका है जी।।

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः।
वेंदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो ।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ।।

!! ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे !! !! मानाशक्त्यै नमः !!

|| कुलदेवी माता की आरती ||

ॐ जय चामुण्डा माता, मैया जय चामुण्डा माता ।
कुलदेवी कुलपालनी ,कुल रक्षक दाता ॥ ॐ जय चामुण्डा....
१

कांगड़ा देवास लौद्रवा, कोलासर राजे ।
शक्तिदादी के संग में, कोटासर साजे ॥ ॐ जय चामुण्डा...२

ऐं शारदा बीजा, ह्रीं रमा रूपा ।
क्लीं कालिका वर्णी, तीनों चामुण्डा रूपा ॥ ॐ जय
चामुण्डा...३

सिंह सवारी सोहे, चतुर्भुजा धारी ।
सूर्यमणि सम आभा, विश्व भवन वारी ॥ ॐ जय चामुण्डा...४

भरद्वाज कुल अम्बा , चण्ड मुण्ड मारे ।
सुर नर नारी ऋषिजन, सबके कष्ट हरे ॥ ॐ जय चामुण्डा...५

नवलख शक्तिसेना , अगवाणी भैरूं ।
छमछम नृत्य करन्ता, बाजे शंख डैरूं ॥ ॐ जय चामुण्डा...६

माँ चामुण्डा की आरती, जो कोई नित गावे ।
रचना कीन्ही श्रीराधे , षट कीर्ति पावे ॥ ॐ जय चामुण्डा...७

रचियता श्रीराधे जोशी

—: शिवपूजन के लिये विशेष तथ्य :—

कामना भेद से रुद्राभिषेक द्रव्य

१. जल से अभिषेक करने पर शीघ्र ही वृष्टि होती है, एवं ज्वर भी शान्त होता है।
२. कुशोदक से अभिषेक करने पर व्याधियों का शमन होता है।
३. दधि से अभिषेक करने पर पशु आदि की प्राप्ति होती है।
४. गन्ने के रस से अभिषेक करने पर लक्ष्मी की सिद्धि प्राप्त होती है।
५. मधु से अभिषेक करने पर धन की प्राप्ति होती है।
६. तीर्थ के जल से अभिषेक करने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है।
७. दूध से अभिषेक करने पर शीघ्र ही पुत्रकी प्राप्ति होती है, और प्रमेहरोग भी नष्ट होता है।
८. घी की धारा से सहस्र नामों से अभिषेक करने पर वंश का विस्तार होता है।
९. शर्करा मिश्रितदूध से अभिषेक करने पर जडबुद्धि भी श्रेष्ठबुद्धि में परिवर्तित हो जाती है।
१०. सर्षों के तेल से अभिषेक करने पर शत्रुओं का शमन होता है।
११. शिवजी का अभिषेक गो शृङ्ग से करना चाहिये (शिवं गवयशृङ्गेण)।
१२. शिवजी के अभिषेक के लिये यजुर्वेदोक्त रुद्री प्रशस्त मानी गयी है।
१३. पवित्र मनुष्य सदा ही उत्तराभिमुख होकर शिवार्चन करें।
१४. मृत्तिका, भस्म, गोबर, आटा, ताँबा और कांस का शिवलिङ्ग बानाकर जो मनुष्य एकबार भी पूजन करता है वह अयुतकल्प तक स्वर्ग में वास करता है।
१५. नौ, आठ, और सात अँगुल का शिवलिङ्ग उत्तम होता है। तीन, छः, पाँच अथवा चार अँगुल का शिवलिङ्ग मध्यम होता है। तीन, दो, और एक अँगुल का शिवलिङ्ग कनिष्ठ होता है। इस प्रकार यथा क्रम से चर प्रतिष्ठित शिवलिङ्ग नौ प्रकार का कहा गया है।
१६. शूद्र, जिसका उपनयन सँस्कार नहीं हुआ है, स्त्री और पतित ये लोग केशव या शिव का स्पर्श करते हैं तो नरक प्राप्त करते हैं। **(स्कन्द पुराण)**
१७. स्वयं प्रदुर्भूत बाणलिंग में, रत्नलिंग में, रसनिर्मित लिंग में और प्रतिष्ठित लिंग में चण्ड का अधिकार नहीं होता।
१८. जहाँ पर चण्डाधिकार होता है वहाँ पर मनुष्यों को उसका भोजन नहीं करना चाहिये। जहाँ चण्डाधिकार नहीं होता है वहाँ भक्ति से भोजन करें। **(नि.सि.पृ.सं.७२०)**
१९. पृथिवी, सुवर्ण, गौ, रत्न, ताँबा, चाँदी, वस्त्रादि को छोड़कर चण्डेश के लिये निवेदन करें। अन्य अन्न आदि, जल, ताम्बूल, गन्ध और पुष्प, भगवान् शङ्कर को निवेदित किया हुआ सब चण्डेश को दे देना चाहिये। **(नि.सि.पृ.सं.७१९)**
२०. विल्वपत्र तीनदिन और कमल पाँच दिन वासी नहीं होता और तुलसी वासी नहीं होती। **(नि.सि.पृ.सं.७१८)**
२१. अँगुष्ठ, मध्यमा और अनामिका से पुष्प चढ़ाना चाहिये एवं अँगुष्ठ–तर्जनी से निर्माल्य को हटाना चाहिये।

बिना सदाशिवम् यो हि संसारम् तर्तुमिच्छती।
स मूढो ही महापापी शिवद्वेषी न संशयः॥

नमः शिवाभ्यां नवयौवनाभ्याम्
परस्पराश्लिष्टवपुर्धराभ्याम् ।
नगेन्द्रकन्यावृषकेतनाभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ।।

बालशुक श्रीराधेजी महाराज

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी । नमो नमो अम्बे दुखहरनी ।।
निरंकार है ज्योति तुम्हारी । तिहूँ लोक फैली उजियारी ।।
शशि लिलाट मुख महाविशाला । नेत्र लाल भृकुटी विकराला ।।
रुप मातु को अधिक सुहावे । दरश करत जन अति सुखपावे ।।
तुम संसार शक्ति लय कीना । पालन हेतु अन्न धन दीना ।।
अन्नपूर्णा हुई जग पाला । तुम ही आदि सुन्दरी बाला ।।
प्रलयकाल सब नाशन हारी । तुम गौरी शिव शंकर प्यारी ।।
शिव योगी तुम्हरे गुण गावें । ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ।।
रुप सरस्वती को तुम धारा । दे सुबद्धि ऋषि मुनिन उबारा ।।
धरा रुप नरसिंह को अम्बा । परगट भई फाड़ कर खम्बा ।।
रक्षा करि प्रहलाद बचायो । हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो ।।
लक्ष्मी रुप धरो जग माहीं । श्री नारायण अंग समाहीं ।।
क्षीरसिंधु में करत विलासा । दयासिंधु दीजै मन आसा ।।
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी । महिमा अमित न जात बखानी ।।
मातंगी धूमावती माता । भुवनेश्वरि बगला सुख दाता ।।
श्री भैरव तारा जग तारिणी । छिन्न भाल भव दुःख निवारिणी ।।
केहरि वाहन सोह भवानी । लंगुर बीर चलत अगवानी ।।
कर में खप्पर खड़ग विराजै । जाको देख काल डर भाजै ।।
सोहै अस्त्र और त्रिशूला । जाते उठत शत्रु हिय शूला ।।
नगरकोट में तुम्हीं बिराजत । तिहूँ लोक में डंका बाजत ।।
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे । रक्त बीज शंखन संहारे ।।
महिषासुर नृप अति अभिमानी । जेहि अघ भार मही अकुलानी।।
रुप कराल काली को धारा । सेन सहित तुम तिहि संहारा ।।
परी गाढ़ सन्तन पर जब जब । भई सहाय मातु तुम तब तब ।।
अमर पुरी औरौं सब लोका । तब महिमा सब रहें अशोका ।।

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी । तुम्हें सदा पूजें नरनारी ।।
प्रेम भक्ति से जो जस गावे । दुःख दारिद्र निकट नहीं आवे ।।
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई । जन्म मरण ताको छुटि जाई ।।
जोगी सुर–मुनि कहत पुकारी । योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी ।।
शंकर आचारज तप कीनो । काम औ क्रोध जीति सब लीनो ।।
निशिदिन ध्यान धरो शंकर को । काहु काल नहि सुमिरो तुमको ।।
शक्ति रुप को मरम न पायो । शक्ति गई तब मन पछितायो ।।
शरणागत हुई कीर्ति बखानी । जय जय जय जगदंब भवानी ।।
भई प्रसन्न आदि जगदंबा । दई शक्ति नहीं कीन विलंबा ।।
मोको मातु कष्ट अति घेरो । तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो ।।
आशा तृष्णा निपट सतावे । मोह मदादिक सब बिनशावें ।।
शत्रु नाश कीजे महारानी । सुमिरौ इकचित तुम्हें भवानी ।।
करो कृपा हे मातु दयाला । ऋद्धि सिद्धि दे करहु निहाला ।।
जब लगि जियौं दयाफल पाँऊ । तुम्हरौ जस मैं सदा सुनाऊँ ।।
दुर्गा चालीसा जो कोई गावैं । सब सुख भोग परम पद पावैं ।।
देवीदास शरण निज जानी । करहु कृपा जगदंबा भवानी ।।

||। शक्तिचामुण्डा नित्य स्तुति अमृतवाणी ।||

जय जय जय कुलदेवी माँ, शक्तिकृपा सुख धाम ।
सब की लज्जा राखिए, माँ कोटि कोटि प्रणाम ॥ 1

कर कमल बालक लिए , मस्तक मुकट अनूप ।
कर्ण कुंडल सिर चुन्दडी, शक्तिदादी रो रूप ॥ 2

आसोज शुक्ला सप्तमी, उत्सव भारी होए ।
दादी के दरबार से, खाली न जाए कोए ॥3

जोशी झुके माँ चरण में , धोके सातम ममाई ।
मन इच्छा पूर्ण करे, जय जय कोटणे री राई ॥ 4

आसोज नोरतां सप्तमी , उत्सव चंहु और ॥
लाल ध्वजा सिर छत्र विराजे, भगतां पर मेहर ॥5

धन्य कोटासर नगर हैं , पावन धाम अमित ।
कुल रखवाळी डोकरी ,करे जगत में जीत ॥6

कृपादृष्टि करो मैया , काया कष्ट अपार ।
दास आ गयो शरण में, दादी किज्यो नैया पार ॥7

दीन जाण दया करो, दीज्यो अन्न धन दान ।
प्रीत रहे कुटुम्ब संग, बल बुद्धि अरु ज्ञान ॥8

राधे रूप निहार के , रहत सदा आनन्द ।
शक्तिचामुण्डा तोहि मौ परे ,करहु कृपा सानन्द ॥9

शक्ति कोटासर धाम हैं ,कलजुग के अवतार ।
भलौ कीजौ भक्त को, माँ बिनती बारम्बार ॥10

शक्ति स्तुति करूँ सदा , जपुँ दादी रो नाम ।
मन इच्छा पूर्ण करो , कहत हुक्माराम ॥ 11

लेखक-श्रीराधे जोशी (हुकम)

||आरती||

ॐ जय श्रीशक्ति दादी,माँ जय श्रीशक्ति दादी ।

आप हो जग की माता,जगदम्बा आदि ||१|| ओम् जय...

कोटासर में विराजत,महिमा अति भारी ।

लाल चुंदड़ी सोहे,मूरत छबि प्यारी ||२|| ओम् जय...

जोशीकुल पर मैहर किन्ही,सब जग को तार्यो ।

जो कोई शरणे आयो,सकल काज सार्यो ||३|| ओम् जय...

प्रगट भई कलजुग में,ब्राह्मण कुल माई ।

वंश उज्ज्वल कीन्हो,कोटासर आई ||४|| ओम् जय...

कुलदेवी चामुंडा , संग भैंरव सोहे ।

चण्ड मुण्ड विनाशनी , दानव मति मोहे।।५।। ओम जय....

माना शक्तिदादी कि, जो महिमा नित वरणी ।

आरती आरत हरणी, सुख सम्पत्ति करणी ।।६।। ओम जय...

दादी शक्ति की आरती,जो कोई नर गावे ।

रचना किन्ही श्रीराधे,दु:ख दारिद जावे ||७|| ओम् जय...

बालशुक श्रीराधे

||दोहा||

श्रीगुरु गणपति शारदा,नमन् वीर हनुमान ।
सक्ति गुण वरणंन करुँ,दीज्यो भगती मोहे ज्ञान।।
निर्मल यश वरणंन करुँ,सक्ति दादी को आधार ।
उपाध्याय कुल में प्रकासिया,ज्यांरी महिमा अपरम्पार ॥

|| चौपाई||
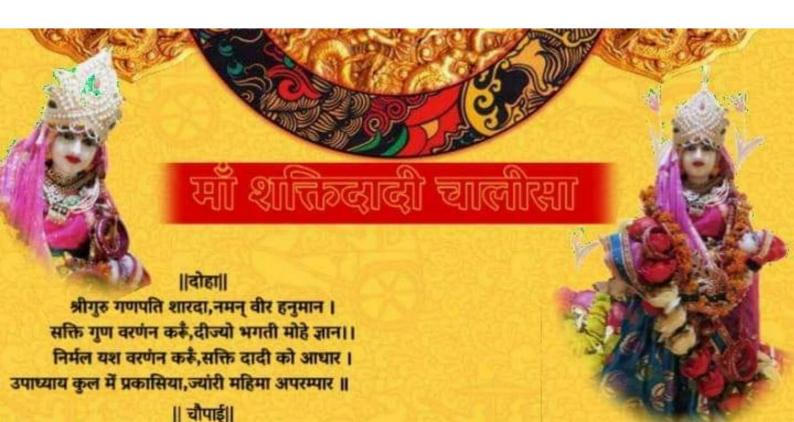
हे सक्ति दादी भगत हितकारी । भगत जनन की प्राणान् प्यारी ॥1
काली दुर्गा रूप भवानी। चामुण्डा संग सक्ति महारानी ॥2
आदि अंत को पार न पाऊँ। मति अनुरूप सक्ति गुण गाउँ ॥3
चामुण्डा चण्ड मुण्ड संहारी । कुलदेवी माँ शरण तिहारी।।4
सक्ति से ब्रह्मा प्रकट भु करहि । पालन विष्णु सक्ति से सरहि।।5
शंकर सक्ति से करे संहारा। भई सक्ति जगत आधरा ॥6
भरद्वाज कुल ब्राह्मण जानी। ब्रह्मा मुख से प्रकट बखानी ॥7
जोशी वंश कुँ पावन कीन्हो। जनम उपाध्या कुल में लीन्हों ।8।
चामुण्डा चण्डी अवतारा। शक्ति सरूप जानत जग सारा ॥9
उपाध्याय वंश प्रगटी महतारी । मुख प्रसन माना अवतारी।।10
अद्भुत तेज मुख पर छाये। पितु जननी मन में हर्षाये ॥11
बाल पने में ध्यान लगावे। मात् पिता संग हरि गुण गावे।।12
मेघासर माँ पीहर बतायो। माना नाम मात धरायो।।13
मरुधर देश बीकाणे मांही । कोटासर जोशी घर ब्याही।।14
नगर कोटासर मंगलाचारा । गावे सुमंगल गीत अपारा।।15
जब से दादी कोटासर आई। नगर मंहु सुख सम्पत्ती छाई।।16
मात पिता गौ सेवा करती। कर प्रणाम भूमि पग धरती।।17
कुलदेवी चामुण्डा ध्यावै।धुप दिप दई भोग लगावै।।18
विधना की गति टारी ना जाये । पति परमेश् स्वर्ग सीधाये।।19
सात सतियों का सुमिरन कीन्हा । पुत्र हाथ ले तन तज दीन्हा।।20
पंद्रह सौ बावन गउ धामा। माना भयो सक्ति को नामा।।21
माता की ममता अधिकाई। देव रूप कुल तारण आई।।22
सक्ति दादी का रूप बणाया। नर नारी सब शरणे आया।।23
कोटासर में मंदिर सोवै । लाल ध्वजा गुमद् फेरावे।।24
मरुधर देश में धाम विराजे। झालर शंख नगारा बाजे।।25
कली काल में आप पधारे। परचा देहि सकंट सब टारे।।26
शक्ति कृपा सुरतरु की छाया । हरहि दरिद्र सुधरहिं काया।।27
कर में आपके बालक साजे। अपने जन के कारज साजे।।28
सुदी सातम् को मेला भारी । अशिवन मास की महिमा न्यारी।।29
चुड़ो चुंदड़ी मात चढ़ावे। अमर सुहाग की आशीष पावे।।30
प्रेम सहित जो पलना चढ़ावे । निपुत होई वो पूत खिलावे ॥31
थारी महिमा को पार ना पावे। जो ध्यावे इच्छित फल पावे।32।
दादी नाम की महिमा भारी। परचा लागे है अति प्यारी।।33
प्रथम करहिं कुलदेवी पूजा। धरेहि ध्यान सक्ति का दूजा।।34
सत् स्वरूप शक्ति महारानी। दर्शन करत हियें हर्षानी।।35
दुःख अनैक जगत में पाये। हम सब तेरी शरणे आये।।36
हम बालक तू मात हमारी। मेटो कुसंकट आरत भारी।।37
अनगिन रूप शक्ति भवानी। "राधेजोशी"चरित बखानी।।38
प्रेम सहित जो जपत चालीसा भुत प्रेत सब मिटेहि कलेशा।।39
भगत जोशी शरण में आयो। दादी चालीसा भण के गायो।।40.

|| दोहा||

जग में देवी जोशीणी,ध्याऊँ में दिन अरु रात।
कोटासर में आप विराजो,जोशीकुल री मात।।

रचयिता_बालशुक श्रीराधे

|| कोटासर भोमियाजी ||
|| की आरती ||

ॐ जय बगतावर दादो सा, श्री भोमियाजी दादो सा ।
अश्वन सवारी सोहे , काटे कष्ट पासा ।। 1

मण्डोरी कुल प्रगटे , कोटासर मांई । दादा..
पिता जवानीसिंह जी , भटियाणी जी माई ।।2
ॐ जय भोमिया जी दादो सा

छत्री वंश पड़िहार , कोटाणे के राजा ।
जो कोई ध्यावे मन से , सारे सब काजा ।। 3

वस्त्र अंग श्वेताम्बर , हाथ खड़ग धारी ।
पिळो पेच किलंगी, भगतन हितकारी ।। 4

भादो शुक्ला दशमी , धोक लगे थारे ।
जो कोई शरण में आवो , मन ईच्छा पूरे ।। 5

दूध पतासा श्रीफल , नित नित भोग लगे ।
ढोल नागड़ा बाजे, जगमग जोत जगे ।। 6

भोमियाजी दादो सा की आरती, जो कोई नित गावे ।
रचना किन्ही श्रीराधे , सब विधि सुख पावे ।। 7

लेखक रचियता श्रीराधे जोशी (हुकम)

अग्निवास ज्ञान सारिणी

पक्ष	तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
शुक्ल पक्ष	१	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	२	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	३	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	४	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	५	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	६	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	७	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	८	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	९	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	१०	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	११	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	१२	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	१३	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	१४	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	१५	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
कृष्ण पक्ष	१	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	२	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	३	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	४	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	५	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	६	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	७	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	८	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	९	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	१०	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	११	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	१२	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	१३	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	१४	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	३०	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल

!! मंगल प्रार्थना !! पं श्री राधे जोशी !!

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्येत्र्यंबके गौरी नारायणि नमोस्तुते ।।

ॐ रक्ष-रक्ष जगन्माते देवि मङ्गल चण्डिके।
हारिके विपदार्राशे हर्षमंगल कारिके।।
हर्षमंगल दक्षे च हर्षमंगल दायिके।
शुभेमंगल दक्षे च शुभेमंगल चंडिके।।
मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगल मंगले।
सता मंगल दे देवि सर्वेषां मंगलालये।।
पूज्ये मंगलवारे च मंगलाभिष्ट देवते।
पूज्ये मंगल भूपस्य मनुवंशस्य संततम्।।
मंगलाधिष्ठात देवि मंगलाञ्च मंगले।
संसार मंगलाधारे पारे च सर्वकर्मणाम्।।
देव्याश्च मंगलंस्तोत्रं यः श्रृणोति समाहितः।
प्रति मंगलवारे च पूज्ये मंगल सुख-प्रदे।।
तन्मंगलं भवेतस्य न भवेन्तद्-मंगलम्।
वर्धते पुत्र-पौत्रश्च मंगलञ्च दिने-दिने।।
मामरक्ष रक्ष-रक्ष ॐ मंगल मंगले।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्येत्र्यंबके गौरी नारायणि नमोस्तुते ।।

।।इति मंगलागौरी स्तोत्रं सम्पूर्ण।।

!! द्वार चौघट एवं चूल्हे का मुहूर्त !!

घर के मुख्यद्वार की चोगट चढानेमें अश्विनी, उ. ३ ह. पुष्य. श्र. मृ. स्वा. रे. रो. यह नक्षत्र शुभ है | प्रतिपदा कों करे तो दुःख होवे, द्वितीयाको धन की हानि होवे, तृतीया रोग करे, चौथ भंग करे, छठ कुलक्षय करे, दशमी धन नाश करे ॥ अमावस्या पूर्णिमा को विरोध करे, बाकी की तिथि संपूर्ण शुभ है, पंचमी धन देवें सप्तमी नोमी अष्टमी शुभ ॥ (लग्नमृद्धि) शुभग्रह केंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ में होवे, पापग्रह ३।६।११ स्थानमें होवे और ७।१० यह स्थान ग्रह रहित होवे तब चोगट रोपणा शुभ है । शुभ वारों में श्रेष्ठ है और पंचक, त्रिपुष्कर योग, कृत्तिका नक्षत्र, सोमवार यह निषेद्ध है । (मुख्य द्वारका मास) कर्क मकर के सूर्यमें पूर्वको दरवाजा करे, तुल मेषके सू र्य में दक्षिन को करे, सिंह कुंभ के सूर्य में पश्चिम को करे और वृष वृश्चिक के सूर्य में उत्तर को द्वार करना शुभ है, यदि इस्से विपरीत करे तो मूर्ख रोग धन नाश को प्राप्त होता है और मीन धन मिथुन कन्या के सूर्य में द्वार कदा चित्त भी करना नहीं चाहिये ॥

(चूल्हेकामु.) पूर्वा रो. पुष्य उ. अश्वि. इन नक्षत्रों में पाक (रसोई) करने की सामग्री स्थापन करके चूल्हा स्थापन करना शुभ है । शनिवार को चूल्हा करे तो दरिद्र होवे, शुक्र को अन्न धन मिले, गुरु को लक्ष्मी मिले, बुध को लाभ होवे , मंगलवार को स्त्री मरे, सोम को धन नाश होवे, आदित्यवार को रोगी होवे । (चूल्ही चक्रम्) सूर्यके नक्षत्रसे ६ नक्षत्र पीठ का है सो सुख करे, च्यार शिर का मृत्यु करे, आठ बाहु का सुख करे पांच गर्भ का नाश करे फिर दो नक्षत्र हाथ का है सो भोग पदारथ करे दो पगों का है सो स्त्री नाश करे इस प्रकार चूल्ही चक्र गर्ग आदि मुनियों ने कहा है ॥

पं. श्रीराधेजी भारद्वाज

(सभार प्रमाण :- मुहूर्त प्रकाश)